उमड़त घुमड़त लरजत बरसत,
मद मदान्ध आ पड़ी रे, बरसिया,
टपकत टिप-टिप, बहत पवन संग,
नव तरु-पल्लव, जीये ही चंदनियाँ,
हर पल , हर क्षण चमके बिजुरिया,
यौवन गीत चढ़ी रे अटरिया,
कृष तरु बेल लिपटत अरु टहनी,
धरा के चुम्बन चढ़ी असमानीया।
मन चकोर बहक जाये रे पल-पल,
कटि उमंग उड़ी-उडी रे दुअरिया।
चिहुँक-चिहुँक भोर काग बोले,
अईहन पिया आज हमरी अंचरिया।
मन पिपास, तन तड़पत सावन,
उड़ेल दे पिया सारी जमुनिया।
तृप्त भये मन मानद सागर,
पिया के लगूँ सखि, मोही गलबहियाँ।